हम नमाज़ कैसे पढ़ें?

नमाज़ के तरीक़ा की सचित्र व्याख्या एवं इस महान धार्मिक प्रतीक के बारे में कुछ बातें

हम नमाज़ कैसे पढ़ें?

नमाज़ के तरीक़ा की सचित्र व्याख्या एवं इस महान धार्मिक प्रतीक के बारे में कुछ बातें

مركز أصول
OsoulCenter
www.osoulcenter.com

ح جمعية الدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالربوة ، ١٤٤٥ هـ

مركز أصول

سلسلة يومي الأول في الإسلام (٢): كيف أصلي: شرح مصور لكيفية الصلاة مع وقفات مع هذه الشعيرة العظيمة باللغة الهندية. / مركز اصول - ط ١. .- الرياض ، ١٤٤٥ هـ

٤٨ ص ؛ ١٤.٨ x ٢١ سم

رقم الإيداع: ١٤٤٥/٢٤٨٤٨

ردمك: ٩٧٨-٦٠٣-٨٤٣٨-٣٨-١

- इस संस्करण को केंद्र ने तैयार तथा डिज़ाइन किया है।
- केंद्र इस संस्करण को किसी भी माध्यम से मुद्रित एवं प्रकाशित करने की अनुमति देता है, इस शर्त के साथ कि संदर्भ का उल्लेख हो और मूल टेक्स्ट में कोई बदलाव न किया जाए।
- मुद्रित करने की अवस्था में केंद्र द्वारा अनुमोदित गुणवत्ता मानकों का पालन करना ज़रूरी होगा।

بسم الله الرحمن الرحيم

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से,
जो बड़ा दयालु एवं अत्यंत दयावान है।

प्राक्कथन

सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो सारे जहान वालों का पालनहार है और दुरूद व सलाम हो हमारे नबी मुहम्मद और आपके तमाम परिवार वालों और साथियों पर, तत्पश्चात :

इस्लाम एहसान व भलाई का धर्म है। वह इंसान एवं उसके रब के बीच, तथा इंसानों के अपने बीच पारस्परिक अच्छे संबंध पर आधारित है।

इंसान एवं उसके रब के बीच के संबंध का सबसे बड़ा सूत्र नमाज़ है। यह एक महान इबादत है। इसमें मुसलमान अल्लाह तआला के सामने खड़ा होता है, उसकी उसी तरह इबादत करता है जैसा कि अल्लाह ने उसे आदेश दिया है, उसकी महानता एवं जलाल (प्रताप, वैभव) को बयान करता है एवं मुहब्बत, डर तथा उम्मीद के साथ उसे पुकारता है।

नमाज़ का बहुत महत्व है। यह इस्लाम का दूसरा स्तंभ है, अल्लाह के एकमात्र पूज्य होने एवं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रसूल होने की गवाही के बाद सबसे उत्तम अमल है एवं जन्नत में प्रवेश पाने का एक महत्वपूर्ण कारण है।

अल्लाह इसके द्वारा दर्जे को ऊँचा करता है, गुनाहों एवं पापों को मिटाता है और उसकी तरफ चलने से ही नेकियाँ लिख दी जाती हैं। मुसलमान ज्यों ही नमाज़ के लिए मस्जिद की ओर चलने लगता है, तो अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में घर बनाने एवं उसका सत्कार करने की तैयारी शुरू कर देता है।

जब तक वह नमाज़ पढ़ने की जगह में बैठा रहता है, तब तक फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते रहते हैं और अल्लाह इसके कारण दो नमाज़ों के बीच के गुनाहों को क्षमा कर देता है। यह नमाज़ी के लिए दुनिया एवं आख़िरत में रोशनी है। दूसरी इबादतों की तुलना में इसका बहुत महत्व है। इसका स्पष्ट प्रमाण इससे बढ़कर और क्या हो सकता है कि यह जिब्रील -अलैहिस्सलाम- के माध्यम से नहीं, बल्कि सीधे अल्लाह तआला की ओर से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर फ़र्ज़ की गई है। यह ज़मीन पर नहीं बल्कि इसरा व मेराज के समय आसमान पर फ़र्ज़ की गई है। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ''आप उस पुस्तक को पढ़ें, जो वह्य (प्रकाशना) की गयी है आपकी ओर, तथा नमाज़ स्थापित करें। वास्तव में, नमाज़ रोकती है निर्लज्जता तथा दुराचार से, और अल्लाह का स्मरण ही सर्व महान है और अल्लाह जानता है, जो कुछ तुम करते हो।'' [सूरा अल-अन्कबूत : 45] आदरणीय जाबिर -अल्लाह उनसे राज़ी हो- से वर्णित है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: ''पाँच नमाज़ों का उदाहरण उस नहर के समान है, जो तुममें से किसी के घर के सामने से पूरी रवानी के साथ बह रही हो और वह उसमें प्रत्येक दिन पाँच बार स्नान करे।'' इसे इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।

विषय सूची

	विषय	पृष्ठ संख्या
1	नमाज़ में हृदय और शरीर के अंगों का विनम्रता धराण करना	9
2	फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ें	13
3	नमाज़ के अहकाम	15
4	हम नमाज़ कैसे पढ़ें?	17
5	नमाज़ को भंग करने वाली वस्तुएँ	32
6	नमाज़ के मकरूह कार्य	33
7	बीमार की नमाज़	35
8	मुसाफिर की नमाज़	36
9	महिला की नमाज़ से संबंधित कुछ विशेष बातें	37
10	मूल्यांकन प्रश्न	40

नमाज़ में हृदय और शरीर के अंगों का विनम्रता धराण करना :

विनम्रता नमाज़ की आत्मा है। यह अल्लाह के लिए हृदय की उपस्थिति, विनम्रता एवं समर्पण तथा केवल नमाज़ में मन को व्यस्त रखने से होता है। इससे अंगों की शांति प्राप्त होती है और उन कामों एवं हरकतों से दूरी पैदा होती है जो नमाज़ का हिस्सा नहीं हैं।

विनम्रता में कमी से नमाज़ पर मिलने वाले पुण्य में कमी होती है और यह कभी-कभी गुनाह का कारण भी बनती है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है : ''बन्दा नमाज़ तो पढ़ता है (परंतु) उसके लिए उस नमाज़ का दसवाँ, नौवाँ, आठवाँ, सातवाँ, छठा, पाँचवाँ, चौथा, तीसरा या आधा हिस्सा ही लिखा जाता है।'' इसे इमाम अहमद ने रिवायत किया है।

विनम्रता को प्राप्त करने में जो चीज़ें मदद करती हैं :

1. मिनमर्ता की प्राप्ति के लिए अल्लाह से दुआ करना।
2. नमाज़ से पूर्व दूसरी चिंताओं से मन को मुक्त कर लेना।
3. सुगंध लगाना तथा नमाज़ के लिए जो भी उचित कपड़े उपलब्ध हों, उन्हें पहनना।
4. यदि हो सके तो घर में ही वज़ू करना और अच्छी तरह वज़ू करना।
5. दुर्गंध से दूर होना एवं कपड़े तथा मुँह से उसे दूर करना।
6. यदि नमाज़ के समय खाना हाज़िर हो तो पहले खा लेना, ताकि नमाज़ पढ़ते समय उसकी ओर ध्यान न जाए।
7. यदि सख़्त पेशाब या पैखाना की ज़रूरत हो, तो नमाज़ से पहले ज़रूरत पूरी कर लना, ताकि नमाज़ से ध्यान न भटके एवं शांति के साथ नमाज़ अदा की जा सके।

8 मस्जिद की ओर शांति एवं आराम से जाना और यदि नमाज़ खड़ी भी हो जाए तो दौड़कर न जाना, क्योंकि जल्दबाज़ी मन को भटकाती है।

9 सुन्नत से साबित दुआओं का ख़्याल रखना। जैसे कि घर से निकलने की दुआ, मस्जिद की तरफ चलने की दुआ और मस्जिद में प्रवेश करने की दुआ।

10 मस्जिद में प्रवेश करने के बाद तहिय्यतुल मस्जिद (मस्जिद में प्रवेश करने की सुन्नत) की दो रकात पढ़ना, नियमित सुन्नतें इन दो रकातों की तरफ से काफ़ी होंगी।

11 नमाज़ खड़ी होने की प्रतीक्षा करते समय के दौरान दुआ करना एवं दुनिया के मामलों के बारे में नमाज़ियों से बात न करना।

फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ें :

अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर दिन व रात में पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं, जो उन तय समयों पर पढ़ी जाएँगी, जिन्हें शरीयत ने निर्धारित किया है। वे क्रम अनुसार इस प्रकार हैं : फ़ज्र, ज़ुहर, अस्र, मग़रिब तथा इशा। इनमें से हर एक के लिए निर्धारित रकातें हैं, जिनके बग़ैर नमाज़ पूरी नहीं होगी। इसी प्रकार हर एक का निश्चित समय है, जिसमें वह अदा की जाएगी। इन तय समयों की जानकारी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों में उल्लिखित निशानियों में से किसी निशानी के द्वारा प्राप्त की जा सकती है। इसी प्रकार विश्वसनीय घड़ियों के माध्यम से या हर समय के लिए मुसलमानों के द्वारा दी जाने वाली अज़ान से मालूम की जा सकती है।

नमाज़ के अहकाम

1. मुसलमान चाहे जो भी गुनाह करे परन्तु वह नमाज़ नहीं छोड़ सकता है। इसलिए कि नमाज़ को सिरे से छोड़ देना मुसलमान का काम नहीं है।

2. असल तथा मूल बात यह है कि पुरुष मस्जिद में जमात के साथ नमाज़ पढ़ें, क्योंकि प्रतिफल के दृष्टिकोण से जमात के साथ नमाज़ पढ़ना अकेले नमाज़ पढ़ने से बहुत बेहतर है। किसी भी पवित्र स्थल जैसे कि घरों, रास्तों तथा मैदानों में नमाज़ पढ़ना सही है।

3. मुसलमान पर वाजिब है कि वह अपने शरीर के छुपाने योग्य अंगों का पर्दा करे और पाक होने की स्थिति में ही नमाज़ में प्रवेश करे। इसी प्रकार से उसके लिए ज़रूरी है कि यदि वह वज़ू के नियम को नहीं जानता है, तो उसे सीखे।

4. जब नमाज़ पढ़ने वाला इमाम हो या अकेला हो, तो बेहतर यह है कि अपने सामने कोई चीज़ सुत्रा के रूप में रख ले, जिसका उद्देश्य नमाज़ में अपने सामने एक पर्दा डालना है, ताकि उसके सामने से गुज़रने वाला उसका ध्यान न भटकाए।

विशेष लाभ : (पवित्रता के अंदर वज़ू, शरीर एवं उस स्थान की पवित्रता दाख़िल है, जहाँ नमाज़ पढ़ी जाए।)

अन्य लाभ : नमाज़ के सही होने की कुछ शर्तें हैं, जिनमें से : पवित्रता, नीयत, क़िबला (काबा) की ओर मुँह करना, समय का होना एवं शरीर के छुपाने योग्य अंगों को ढाँकना है।

हम नमाज़ कैसे पढ़ें?

नमाज़ के तरीक़े की सचित्र व्यवहारिक व्याख्या

चार रकात वाली नमाज़ कैसे पढ़ें?

ज़ुहर, अस्र और इशा की नमाज़ के तरीक़े की सचित्र व्याख्या

1 **क़िबला की ओर मुँह करना :** यह मक्का का रुख़ है। जो काबा से दूर हो उसके लिए बिल्कुल सटीकता के साथ काबा का रुख़ करना ज़रूरी नहीं है, बल्कि अंदाज़ा से उसकी ओर रुख़ करना पर्याप्त है। यदि कोई काबा को देख रहा है, तो उसके लिए सटीकता के साथ काबा को सामने करना ज़रूरी है।

2 **नीयत :** हम ज़ुबान से नहीं बल्कि दिल से नीयत करें। अर्थात, हार्दिक रूप से हमें यह एहसास हो कि हम वह नमाज़ पढ़ रहे हैं, जिसका समय अभी हुआ है।

3 **तकबीर-ए-तहरीमा** (नमाज़ में प्रवेश करने की तकबीर) :

- **क** हम अपने हाथों को दोनों कंधों या दोनों कानों के बराबर उठाएँ, इस हाल में कि हमारी दोनों हथेलियों का भीतरी भाग क़िबले की ओर हो, और ''अल्लाहु अकबर'' कहें। इसको ज़ुबान से कहना अनिवार्य है।
- **ख** तकबीर के बाद सुन्नत यह है कि हम अपने दाएँ हाथ को बाएँ हाथ पर रखें, और दोनों हाथ सीने पर हों या नाभि से ऊपर या नाभि से नीचे, जो भी हमारे लिए आसान हो।

बारकोड स्कैन करके नमाज़ के पूरे तरीक़े से संबंधित संपूर्ण शैक्षणिक सामग्री देखें।

ग हम सजदा करने के स्थान को देखें। न हम अपनी आँखों को आसमान की ओर उठाएँ और न इधर-उधर देखें।

4 नमाज़ शुरू करने की दुआ : हम नमाज़ आरंभ करने की दुआओं में से कोई एक दुआ पढ़ेंगे। उनमें से एक दुआ इस प्रकार है : "ऐ अल्लाह, मेरे तथा मेरे गुनाहों के बीच उतनी दूरी पैदा कर दे, जितनी दूरी पूरब और पश्चिम के बीच रखी है। ऐ अल्लाह, मुझे गुनाहों से साफ़ कर दे, जैसे उजले कपड़े को मैल-कुचैल से साफ़ किया जाता है। ऐ अल्लाह, मुझे मेरे गुनाहों से पानी, बर्फ और ओले से धो दे।"

5 अऊज़ु बिल्लाह कहना : हम "أعوذُ باللهِ مِنَ الشَّيطانِ الرَّجيم" (मैं धुतकारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ) कहेंगे।

6 सूरा फ़ातिहा पढ़ना : एक-एक आयत करके आराम से एवं ध्यान पूर्वक सूरा फ़ातिहा पढ़ेंगे। सूरा फ़ातिहा अत्यंत महान दुआओं पर आधारित है। इसी लिए उसके बाद ''आमीन कहेंगे। यह दरअसल एक दुआ है, जिसका अर्थ है ''हे अल्लाह, तू स्वीकार कर ले''। यह सूरा फ़ातिहा की आयत नहीं है।

7 क़ुरआन का जितना भाग हो सके, पढ़ना : सूरा फ़ातिहा पढ़ने के बाद कोई दूसरी पूरी सूरा या उसका कुछ अंश पढ़ेंगे।

8 रुकूअ करना :

क हम अपने दोनों हाथों को दोनों कंधों या दोनों कानों के बराबर उठाएँगे और ''अल्लाहु अकबर'' कहेंगे तथा क़याम की स्थिति से रुकू की स्थिति में जाएँगे।

ख हम दोनों हथेलियों को दोनों घुटनों पर रखेंगे, अपनी उँगलियों को एक-दूसरे से अलग रखेंगे और हथेलियों को घुटनों पर इस तरह मज़बूती से रखेंगे, मानो उन्हें पकड़े हुए हों।

ग हम इत्मीनान से रुकू करेंगे, अपनी पीठ को सीधी रखेंगे, धनुष की तरह (टेढ़ी) नहीं, पीठ के साथ सर को भी सीधा रखेंगे न कि उठा कर या झुका कर।

घ इस अवस्था में हम अपने हाथों को अपने पहलुओं से अलग रखेंगे तथा किसी एक ओर अधिक झुककर अपने गाल का बाहरी भाग स्पष्ट नहीं करेंगे।

ड़ फिर तीन बार ''सुबहाना रब्बी अल-अज़ीम'' कहेंगे। यह पूर्णता का निम्नतम स्तर है। इससे अधिक भी कह सकते हैं और एक बार कहना भी पर्याप्त है। इसके अलावा भी कई दुआएँ हैं, जो रुकू में पढ़ी जा सकती हैं।

9 रुकू से उठना : इसके बाद हम अपने सिर को रुकू से उठाएँगे, अपने दोनों हाथों को दोनों कंधों या दोनों कानों के बराबर उठाएँगे। यदि नमाज़ी अकेला है अथवा नमाज़ियों का इमाम है, तो वह "سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَه" कहेगा।

रुकू से उठने के बाद हम अपने हाथों को छोड़कर भी रख सकते हैं और उन्हें बाँध भी सकते हैं।

10 रुकू के बाद सीधे खड़े होना: यह दुआ ''रब्बना व लकल ह़म्दु'' (हे अल्लाह, तेरी ही प्रशंसा है) पढ़ते हुए सीधे खड़े होंगे। रुकू के बाद लंबा खड़ा होना तथा इसमें इत्मीनान प्राप्त करना सुन्नत है।

11 सजदा :

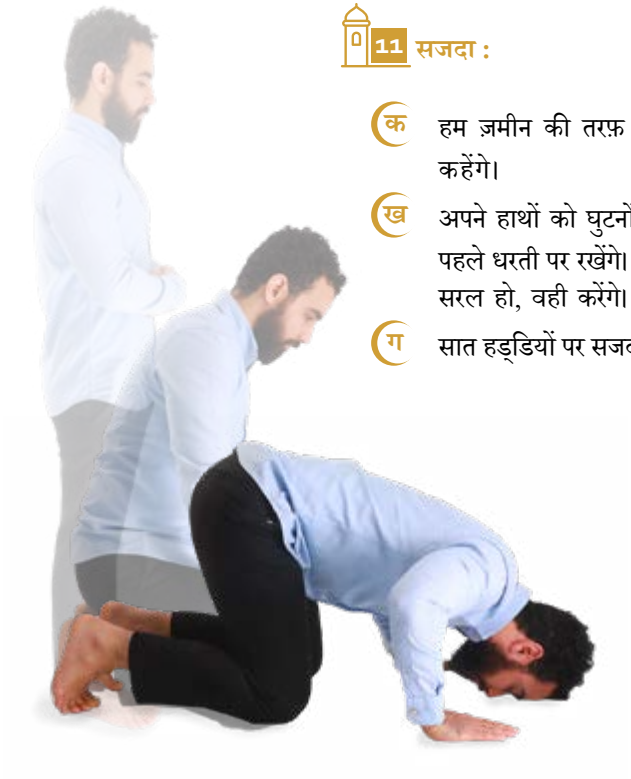

क हम ज़मीन की तरफ़ जाते हुए **''अल्लाहु अकबर''** कहेंगे।

ख अपने हाथों को घुटनों से पहले या घुटनों को हाथों से पहले धरती पर रखेंगे। दोनों में से हमारे लिए जो अधिक सरल हो, वही करेंगे।

ग सात हड्डियों पर सजदा करेंगे, जो इस प्रकार हैं :

- इनमें से किसी एक के बारे में भी लापरवाही नहीं करेंगे।

घ अपने दोनों हाथों की उंगलियों को मिला करके क़िबला रुख़ रखेंगे, दोनों हथेलियों को दोनों कंधों या कानों के बराबर रखेंगे और दोनों बाहों को ज़मीन से उठाकर रखेंगे।

ड़ यदि हम जमात से नमाज़ न पढ़ रहे हों और आस-पास के लोगों को कष्ट देने का डर न हो, तो दोनों हाथों को ज़मीन से ऊँचा और पहलू से अलग रखेंगे।

च दोनों पैरों की उंगलियों को क़िबला रुख़ रखेंगे, दोनों पैरों को जमीन पर टिकाए रखेंगे, दोनों रानों के बीच दूरी रखेंगे और पेट को उनसे अलग रखेंगे।

छ फिर तीन बार ''सुबहाना रब्बी अल-आला'' कहेंगे। यह पूर्णता का न्यूनतम स्तर है। इससे अधिक भी कह सकते हैं और एक बार कहना भी पर्याप्त है। इसके साथ अन्य साबित दुआएँ भी कह सकते हैं।

ज फिर दुनिया एवं आख़िरत की जितनी भलाइयाँ चाहें, माँगेंगे।

12 **सजदे से सर उठाना :** फिर हम सजदा से सर उठाते हुए ''अल्लाहु अकबर'' कहेंगे, और दोनों सजदों के बीच बैठेंगे।

13 दोनों सजदों के बीच की बैठक :

क बाएँ पैर को बिछा देंगे और उसपर आराम से बैठेंगे। दाएँ पैर को खड़ा रखेंगे और उसकी उंगलियों को क़िबला रुख़ रखेंगे। या फिर दोनों पैरों को टिका देंगे और एड़ी पर बैठेंगे।

ख दाईं हथेली को दाईं रान पर और बाईं हथेली को बाईं रान पर फैलाते हुए घुटने के निकट या घुटने पर रख देंगे।

ग फिर कहेंगे "ربِّ اغفِر لي، ربِّ اغفِر لي" (हे मेरे पालनहार, मुझे क्षमा कर दे, ऐहमारे पालनहार, मुझे माफ़ कर दे।)

14 सजदे :

तकबीर अर्थात अल्लाहु अकबर कहते हुए दूसरे सजदे के लिए झुकेंगे। दूसरे सजदे का तरीक़ा और दुआएँ पहले सजदे की तरह ही हैं।

15 सजदा से खड़ा होना :

सजदा से क़याम के लिए खड़े होते समय हम ''अल्लाहु अकबर'' कहेंगे।

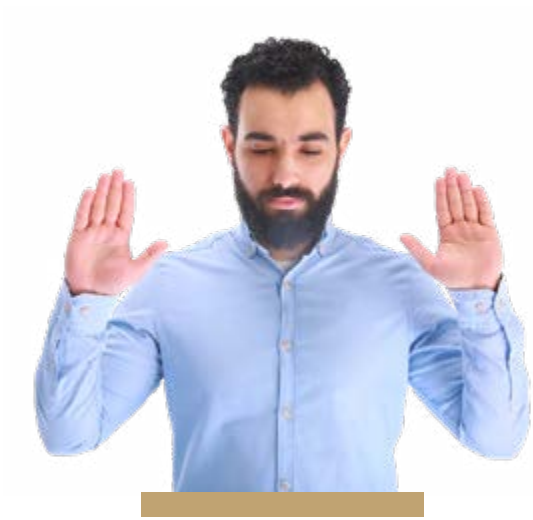

16 फिर हम दूसरी रकात उसी तरह अदा करेंगे, जिस तरह से पहली रकात अदा की थी :

- दोनों हाथों को सीने पर रखेंगे, सूरा फ़ातिहा पढ़ेंगे, फिर कोई दूसरी सूरा या उसका कुछ अंश पढ़ेंगे।
- उसके बाद तकबीर कहेंगे, रुकू करेंगे और तस्बीह (अर्थातः सुब्हाना रब्बी अल-अज़ीम) पढ़ेंगे।
- फिर रुकू से खड़े होंगे और "سِمعَ اللهُ لمَن حَمِدَه" कहेंगे।
- फिर सीधे खड़े होंगे और "ربنا ولك الحمد" (रब्बना व लकल ह़म्द) कहेंगे।
- फिर तकबीर कहेंगे और सजदा करेंगे तथा उसमें तसबीह (अर्थात सुब्हाना रब्बी अल-आला) पढ़ेंगे।
- फिर तकबीर कहेंगे, बैठेंगे और "ربِّ اغفر لي" कहेंगे।
- उसके बाद तकबीर कहेंगे, दूसरा सजदा करेंगे और तस्बीह पढ़ेंगे।

17 पहला तशह्हुद :

क हम ''अल्लाहु अकबर'' कहेंगे, सजदा से सर उठाएँगे और जिस तरह दोनों सजदों के बीच बैठे थे, उसी प्रकार से तशह्हुद के लिए बैठेंगे।

ख दाएँ हाथ को दायीं रान पर रखेंगे, सभी उंगलियों को जमा कर लेंगे सिवाय तर्जनी के, उसके द्वारा क़िबला की ओर इशारा करेंगे। या अंगूठे को बीच वाली उंगली के साथ मिलाकर एक दायरा (परिधि) बना लेंगे और शहादत की उँगली (तर्जनी) से इशारा करेंगे। जहाँ तक बाएँ हाथ की बात है, तो या तो उसे बाईं रान पर बिछा देंगे या उससे घुटना को पकड़ेंगे।

ग तशह्हुद के दौरान तर्जनी उँगली की ओर देखेंगे।

घ तशह्हुद की यह दुआ पढ़ेंगे :

"التَّحيَّاتُ لله والصَّلواتُ والطَّيِّباتُ، السلامُ عليكَ أيُّها النبيُّ ورحمةُ اللهِ وبَرَكاتُه، السلامُ علَينا وعلى عبادِ اللهِ الصَّالِحين، أشهدُ أن لا إلهَ إلَّا اللهُ، وأشهدُ أنَّ محمَّدًا عبدُهُ ورسولُه"

(हर प्रकार का सम्मान, समस्त दुआएँ एवं समस्त अच्छे कर्म व अच्छे कथन अल्लाह के लिए हैं। हे नबी! आपके ऊपर सलाम, अल्लाह की कृपा तथा उसकी बरकतों की वर्षा हो, हमारे ऊपर एवं अल्लाह के भले बंदों के ऊपर भी सलाम की जलधारा बरसे। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं एवं मुहम्मद अल्लाह के बंदे तथा उसके रसूल हैं।)

18 तशह्हुद से खड़ा होना : उसके बाद तीसरी रकात के लिए उठेंगे, अपने दोनों हाथों को दोनों कंधों या दोनों कानों के बराबर उठाएँगे, और ''अल्लाहु अकबर'' कहेंगे, तथा पहली रकात की तरह ही यह रकात अदा करेंगे, किंतु इसमें केवल सूरा फ़ातिहा पढ़ेंगे।

- उसके बाद तकबीर कहेंगे, रुकू करेंगे और तस्बीह पढ़ेंगे।
- फिर रुकू से खड़े होंगे और "سمِعَ اللهُ لمَن حَمِدَه" कहेंगे।
- फिर सीधे खड़े होंगे और "ربنا ولك الحمد" कहेंगे।
- फिर तकबीर कहेंगे और सजदा करेंगे और उसमें तस्बीह पढ़ेंगे।
- फिर तकबीर कहेंगे, बैठेंगे और "ربِّ اغفر لي" कहेंगे।
- उसके बाद तकबीर कहेंगे, दूसरा सजदा करेंगे और तस्बीह पढ़ेंगे।

19 सजदे से खड़ा होना : सजदे से खड़े होते समय हम ''अल्लाहु अकबर'' कहेंगे। फिर चौथी रकात उसी तरह अदा करेंगे, जिस तरह दूसरी रकात अदा की थी। सिवाय यह कि इसमें केवल सूरा फ़ातिहा पढ़ेंगे।

- उसके बाद तकबीर कहेंगे, रुकू करेंगे और तस्बीह पढ़ेंगे।
- फिर रुकू से खड़े होंगे और "سمِعَ اللهُ لمَن حَمِدَه" कहेंगे।
- फिर सीधे खड़े होंगे और "ربنا ولك الحمد" कहेंगे।
- फिर तकबीर कहेंगे और सजदा करेंगे और उसमें तस्बीह पढ़ेंगे।
- फिर तकबीर कहेंगे, बैठेंगे और "ربِّ اغفر لي" कहेंगे।
- उसके बाद तकबीर कहेंगे, दूसरा सजदा करेंगे और तस्बीह पढ़ेंगे।

20 आख़िरी तशह्हुद :

क हम सजदे से उठेंगे, ''अल्लाहु अकबर'' कहेंगे और तशह्हुद के लिए बैठेंगे।

ख तवर्रुक करेंगे। अर्थात बाएँ कूल्हे पर बैठेंगे, दाएँ पैर को खड़ा रखेंगे और बाएँ पैर को दाएँ पैर के नीचे से निकाल देंगे।

ग फिर कहेंगे "التحيات لله..." अंत तक। फिर दरूद-ए-इब्राहीमी पढ़ेंगे, जो इस प्रकार है : "हे अल्लाह! मुहम्मद एवं उनकी संतान-संतति की उसी प्रकार से प्रशंसा कर, जिस प्रकार से तूने इब्राहीम एवं उनकी आल की प्रशंसा की है। निस्संदेह तू प्रशंसा योग्य तथा सम्मानित है। एवं मुहम्मद तथा उनकी संतान-संतति पर उसी प्रकार से बरकतों की बारिश कर, जिस प्रकार से तूने इब्राहीम एवं उनकी संतान-संतति पर की है। निस्संदेह तू प्रशंसा योग्य तथा सम्मानित है।" फिर जो भी दुआएँ क़ुरआन व हदीस में आईं हैं, उन्हें पढ़ना सुन्नत है। जैसे कि : "हे अल्लाह मैं तेरी शरण चाहता हूँ, नरक के दण्ड से, कब्र के अज़ाब से, जीवन और मृत्यु के फितने से और मसीह दज्जाल के फितने से।"

फिर दुनिया एवं आख़िरत की जितनी भलाइयाँ चाहें, माँगेंगे।

21 सलाम फेरना : हम "السلامُ عليكُم ورحمةُ الله" कहेंगे और अपने चेहरे को दाईं ओर मोड़ेंगे, फिर "السلامُ عليكُم ورحمةُ الله" कहेंगे अपने चेहरे को बाईं ओर मोड़ेंगे। इस तरह हमने अपनी नमाज़ को समाप्त किया।

22 सुन्नत यह है कि नमाज़ी सलाम फेरने के बाद थोड़ी देर बैठे, अल्लाह से तीन बार क्षमा माँगे (अर्थात तीन बार "अस्तग़फ़िरुल्लाह" कहे) और उसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित अज़कार के द्वारा अल्लाह का स्मरण करे।

दो रकात वाली नमाज़ या तीन रकात वाली नमाज़ कैसे पढ़ें?

क यदि नमाज़ दो रकात वाली हो, जैसे कि फ़ज्र की नमाज़, तो दूसरी रकात के दोनों सजदों के बाद तशह्हुद के लिए बैठेंगे और "التحيات لله..." को अंत तक पढ़ेंगे, फिर दुरूद-ए-इब्राहीमी पढ़ेंगे और इसके बाद सलाम फेरेंगे।

ख यदि नमाज़ तीन रकात वाली हो, जैसे कि मग़रिब की नमाज़, तो तीसरी रकात के दोनों सजदों के बाद तशह्हुद के लिए बैठेंगे और "التحيات لله..." को अंत तक पढ़ेंगे, फिर दुरूद-ए-इब्राहीमी पढ़ेंगे और इसके बाद सलाम फेरेंगे।

चेतावनियाँ :

1. इफ़्तिराश (एक पैर को बिछाने) वाली बैठक : बाएँ पाँव को बिछाकर बैठने की विधि से दो रकात वाली नमाज़ों, जैसे सुबह, जुमा और दोनों ईदों की नमाज़ों में बैठा जाता है। तीन तथा चार रकात वाली नमाज़ों के पहले तशह्हुद में और दो सजदों के बीच भी इसी तरह बैठा जाता है।

2. तवर्रुक वाली बैठक (अर्थात बाएँ कूल्हे को ज़मीन पर रखना और बाएँ पैर को दाहिनी पिंडली के नीचे कर लेना) : यह तीन अथवा चार रकातों वाली नमाज़ के अंतिम तशह्हुद में होती है।

3. जो भारी शरीर या पाँव में कष्ट आदि के कारण बायाँ पाँव बिछाकर बैठने में असमर्थ हो, वह जिस विधि से चाहे बैठ सकता है।

नमाज़ को भंग करने वाली वस्तुएँ :

1- सामर्थ्य रखते हुए नमाज़ की शर्तों में से किसी शर्त का पालन न करना।

2- जान बूझकर नमाज़ के स्तंभों (अरकान) में से किसी स्तंभ (रुक्न) को छोड़ देना।

3- जान बूझकर नमाज़ के फ़र्ज़ (अनिवार्य) कार्यों में से किसी को छोड़ देना।

4- जान बूझकर अत्यधिक हरकत करना, बात करना तथा बिना ज़रूरत चलना।

5- हंसना और ठहाका मारना।

6- जान बूझकर खाना एवं पीना।

नमाज़ में भूलने एवं ग़लती करने के कुछ अहकाम हैं, मुसलमानों को उन्हें जानना चाहिए।

नमाज़ के मकरूह कार्य :

कुछ ऐसे काम हैं जिनसे नमाज़ बातिल (भंग) तो नहीं होती है, परंतु नमाज़ की अवस्था में उन्हें करना अप्रिय (मकरूह) माना जाता है। नमाज़ी के लिए ऐसा करना उचित नहीं है। जैसे कि :

1- नमाज़ में चेहरा को इधर-उधर फेरना।

2- शरीर के किसी अंग से बेकार खेलना, उंगलियां चटकाना तथा उंगलियों को आपस में फंसाना।

3- ऐसी चीज़ की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ना, जो नमाज़ से उसका ध्यान हटाती हो।

4- पाखाना या पेशाब रोक कर नमाज़ पढ़ना।

5- फ़र्ज़ नमाज़ की पहली दो रकातों में केवल सूरा फ़ातिहा पढ़ना।

6- खाना हाजिर होने के होतु हुए नमाज़ पढ़ना।

7- नमाज़ में कपड़ा लपेटना।

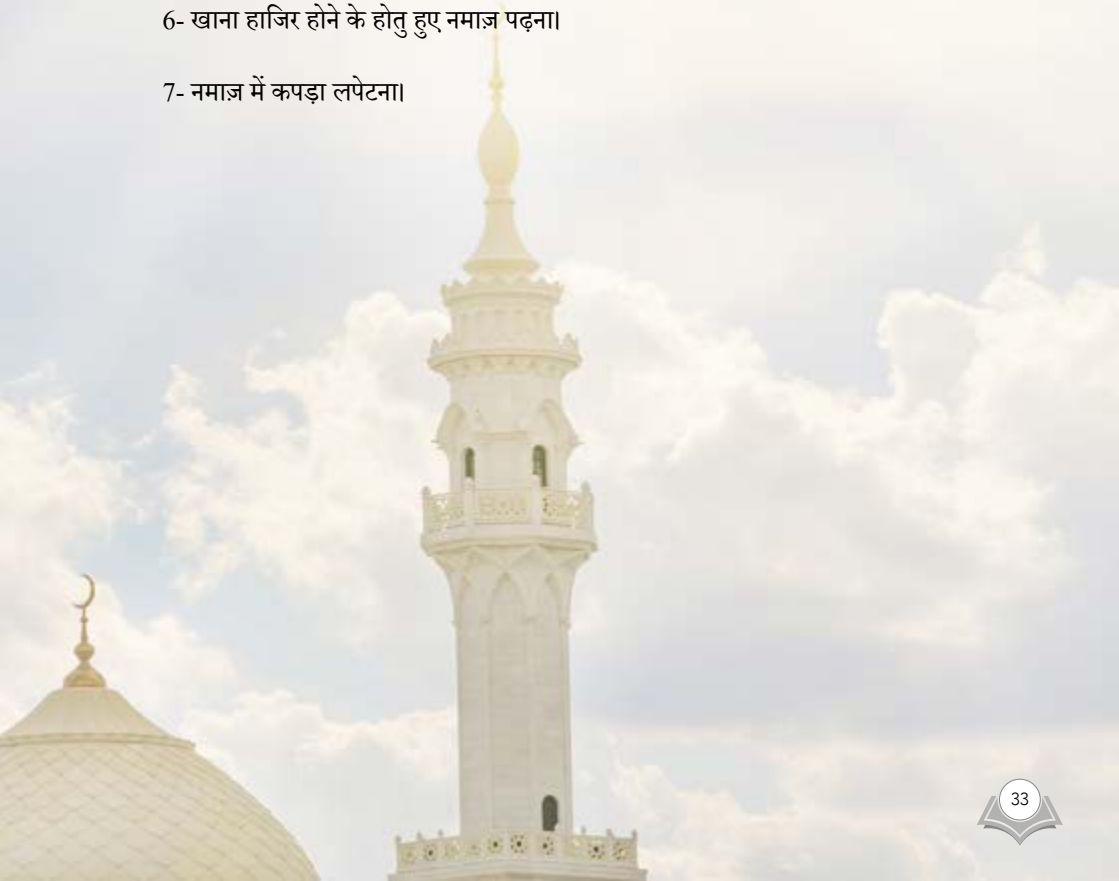

बीमार की नमाज़ :

फ़र्ज़ नमाज़ें एक समझ रखने वाले वयस्क मुसलमान व्यक्ति से किसी भी परिस्थिति में माफ नहीं होतीं, सिवाय माहवारी और निफ़ास (प्रसव के बाद आने वाला रक्त) वाली मुसलमान महिला के।

मुसलमान पर उसे हमेशा, हर हाल में पढ़ना वाजिब है।

परन्तु यदि मुसलमान बीमार पड़ जाए और उसके लिए नमाज़ का अदा करना मुश्किल हो जाए, तो क्या करे?

यह अल्लाह तआला की रहमत ही है कि वह इंसान को उसकी शक्ति एवं क्षमता से अधिक करने का आदेश नहीं देता है। यदि मुसलमान बीमार हो जाए और नमाज़ में खड़ा न हो सके तो फ़र्ज़ नमाज़ में खड़ा होने की अनिवार्यता उससे समाप्त हो जाती है। वह बैठकर नमाज़ पढ़ेगा और प्रत्येक उस रुक्न (स्तंभ) को अंजाम देगा जिसे करने में वह सक्षम है। यदि वह रुकू एवं सजदा नहीं कर सकता है, तो उन दोनों को इशारों में अदा करेगा (अर्थात, जितना हो सके झुकेगा, तथा रुकू की तुलना में सजदे में अधिक झुकेगा)। यदि रुकू कर सकता है, पर सजदा नहीं, या सजदा कर सकता है, रुकू नहीं, तो जो कर सकता है, उसे करेगा और जो नहीं कर सकता है, उसे इशारा में अंजाम देगा।

यदि बैठकर नमाज़ नहीं पढ़ सकता है, तो जितना हो सके अपने चेहरा को क़िबला की ओर करके पहलू के बल लेटकर नमाज़ पढ़ेगा, और रुकू एवं सजदे के लिए इशारा करेगा।

यदि पहलू के बल लेटकर भी नमाज़ नहीं पढ़ सकता है, तो चित्त लेटकर नमाज़ पढ़ेगा। इस अवस्था में दोनों पैर क़िबले की ओर होंगे। यदि हो सके तो अपने सर को उठाएगा और रुकू तथा सजदे के लिए इशारा करेगा।

यदि इशारा भी नहीं कर सकता है, तो उससे इशारा भी ख़त्म हो जाएगा। वह अपने दिल में ही रुकू एवं सजदा के लिए नीयत कर लेगा।

बीमार की नमाज़ का सिद्धांत यह है कि :

वाजिब चीज़ों में से जो भी कर सकता हो करेगा और जो नहीं कर सकता हो वह उससे माफ़ हो जाएगा।

मुसाफिर की नमाज़ :

इस्लाम सरल तथा सहज धर्म है, इसका एक प्रमाण तथा रूप यह है कि यात्री की नमाज़ में सरलता का ध्यान रखा गया है। अतः उसके लिए चार रकात वाली नमाज़ों को कम करके दो रकात पढ़ना शरीयत सम्मत है, इस प्रकार से कि चार रकातों वाली नमाज़ों जैसे ज़ुहर, अस्र एवं इशा की नमाजों में मुसाफिर हर एक नमाज़ की केवल दो रकात पढ़ेगा।

महिला की नमाज़ से संबंधित कुछ विशेष बातें

नमाज़ के मामले में महिला पुरुष की ही तरह है, सिवाय कुछ बातों के जो महिला के साथ खास हैं। जैसे कि :

- माहवारी और निफास की अवस्था में महिला से नमाज़ माफ़ हो जाती है। इससे ठीक होने के बाद छूटी हुई नमाज़ों को पढ़ना ज़रूरी नहीं है।
- महिला के लिए जुमा की नमाज़ में हाज़िर होना ज़रूरी नहीं है।
- महिला के लिए फ़र्ज़ नमाज़ों को जमात के साथ अदा करना ज़रूरी नहीं है।
- स्त्री के लिए नमाज़ की अवस्था में चेहरे तथा दोनों हथेलियों के अतिरिक्त शरीर के अन्य सभी भाग को छिपाना अनिवार्य है।

अंत में :

हम महान एवं उच्च अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह हमें तथा हमारे मुस्लिम भाइयों एवं बहनों को धर्म के इस महान स्तंभ को उस प्रकार से अदा करने की क्षमता प्रदान करे जिससे वह हमसे ख़ुश हो जाए तथा हम उससे वही दुआ करते हैं जो अल्लाह के ख़लील (मित्र) इब्राहीम -अलैहिस्सलाम- ने की थी कि {رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ} (ऐ मेरे रब, तू मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ स्थापित करने वाला बना, और ऐ हमारे रब, हमारी दुआ को स्वीकार कर ले)। [सूरा इब्राहीम: 40]

यह (मेरी ओर से है) और अल्लाह बेहतर जानता है। दुरूद व सलाम तथा बरकत हो अल्लाह के बंदे और उसके नबी मुहम्मद पर।

मूल्यांकन प्रश्न

1 (सही) या (ग़लत) लिखें

- [ ] नमाज़ बन्दा एवं उसके रब के बीच के सूत्र का नाम है, जिसमें वह अल्लाह तआला के सामने उसका सम्मान एवं आदर करते हुए खड़ा होता है।।
- [ ] विनम्रता में कमी से नमाज़ के प्रतिफल में कमी होती है।
- [ ] नमाज़ हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है, यद्यपि वह पाप एवं गुनाह करने के द्वारा अपने आपपर अत्याचार करने वाला ही क्यों न हो।
- [ ] क़िबला की ओर रुख़ करने का अर्थ है मक्का की ओर रुख़ करना
- [ ] बिना नीयत किए मुसलमान की नमाज़ हो जाती है
- [ ] उस व्यक्ति के लिए सूरा फ़ातिहा पढ़ना रुक्न अर्थात स्तंभ है, जो इसे पढ़ सकता हो। उसकी नमाज़ इसे पढ़े बिना नहीं होती है
- [ ] फ़र्ज़ नमाज़ें एक समझ रखने वाले वयस्क मुसलमान व्यक्ति से किसी भी परिस्थिति में माफ नहीं होतीं, सिवाय माहवारी और निफ़ास (प्रसव के बाद आने वाला रक्त) वाली मुसलमान महिला के।
- [ ] मुसाफिर के लिए जायज़ है कि वह चार रकात वाली नमाज़ों को केवल दो-दो रकात पढ़े।
- [ ] जुमा और जमात दोनों महिलाओं पर अनिवार्य नहीं हैं
- [ ] यदि खड़ा होने में सक्षम न हो तो क्या बैठकर नमाज़ पढ़ना सही है?
- [ ] क्या नमाज़ में इधर-उधर मुँह फेरना सही है?
- [ ] क्या नमाज़ में बात करना या खाना जायज़ है?
- [ ] क़िबला के अलावा किसी और तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ ली, जबकि वह उसे जान सकता था या उसके बारे में पूछ सकता था, क्या इससे नमाज़ सही होगी?
- [ ] किसी ने सजदा किया और दोनों पैरों की सभी उँगलियों को ज़मीन से उठा लिया, क्या इससे सजदा सही होगा?

2 **नमाज़ की पहली रकात में दोनों सजदों में से एक सजदा भूल गया, फिर दूसरी रकात में याद आया, तो क्या एक सजदे के साथ उसकी पहली रकात सही होगी, क्योंकि वह भूल गया था?**

☐ हाँ ☐ नहीं

3 **चुनें :**

1. दिन एवं रात में मुसलमानों पर फ़र्ज़ नमाज़ों की संख्या (सात, दस, पाँच (सत्रह, पंद्रह)) है।

☐ सात ☐ दस ☐ पाँच

2. नमाज़ के सही होने की शर्तें हैं

☐ पवित्रता ☐ नीयत

☐ क़िबला की ओर मुँह करना ☐ ऊपर लिखे गए सभी

3. रुकू की दुआ है

☐ सुब्हान रब्बियल् आला ☐ सुब्हान रब्बियल् अज़ीम

☐ अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन

4. तशह्हुद से खड़े होने के बाद क्या करें?

☐ हम तकबीर कहेंगे, खड़े होंगे, सूरा फ़ातिहा पढ़ेंगे, फिर रुकू करेंगे

☐ तकबीर कहेंगे और सजदा करेंगे

5. मल-मूत्र त्याग की आवश्यकता होने के बावजूद नमाज़ पढ़ी, तो उसकी नमाज़ का क्या हुक्म है :

☐ मकरूह ☐ हराम ☐ जायज़

मूल्यांकन प्रश्न

4 पूरा करें :

1. दोनों गवाही के बाद सबसे उत्तम इबादत.....है।
2. मग़रिब की नमाज़.....रकातें हैं, जबकि ज़ुहर की नमाज़.....रकातें हैं।
3. नमाज़ को हम तकबीर से शुरू करेंगे तथा ....पर समाप्त करेंगे।.....
4. स्त्री के लिए नमाज़ की अवस्था में.....और.. .....के अतिरिक्त शरीर के अन्य सभी भागों को छिपाना अनिवार्य है।

5 नमाज़ की तीन फ़ज़ीलतों का उल्लेख करें

.....

.....

6 नमाज़ स्थापित करने के महत्व पर कोई दलील प्रस्तुत करें?

.....

.....

.....

7 अंतिम तशह्हुद की क्या दुआ है?

.....

.....

.....

8 दोनों सज्दों के बीच की प्रामाणिक दुआ क्या है?

.....

9 सजदों की प्रामाणिक दुआ क्या है?

.....

10 किन्हीं चार साधनों का उल्लेख करें, जो नमाज़ में विनम्रता प्राप्त करने में सहायक होते हैं?

.....

11 चार रकात वाली फ़र्ज़ नमाज़ें कौन-कौन-सी हैं?

.....

12 एक आदमी कुर्सी के अलावा और किसी चीज़ पर नहीं बैठ सकता है, तो क्या कुर्सी पर उसकी नमाज़ सही होगी?

.....

13 पहला तशह्हुद जान-बूझकर छोड़ दिया, तो उसकी नमाज़ का क्या आदेश है?

.....

नमाज़ एक महत्वपूर्ण इस्लामी प्रतीक

यह नमाज़, जिसे मुसलमान दिन व रात में फ़र्ज़ के रूप में पाँच बार अदा करते हैं, जिसे वे उस समय तक नहीं छोड़ते, जब तक उनके अंदर शक्ति व क्षमता बाक़ी रहती है, जिसके लिए वे मीठी नींद को त्याग देते हैं और काम-काज छोड़ देते हैं, यह दरअसल माँ की उस ममता भरी गोद के समान है, जहाँ छोटा बच्चा उस समय शरण लेता है, जब उसे कोई चीज़ डराती है। तौहीद (एकेश्वरवाद) के बाद, मुसलमान को इसे सीखने एवं सिखाने के लिए सबसे ज़्यादा उत्सुक होना चाहिए। इस पुस्तिका में नमाज़ का, तकबीर (अल्लाहु अकबर) से तसलीम (सलाम) तक, सरलता के साथ विस्तार से विवरण है। साथ ही इससे संबंधित कुछ आदेशों एवं नियमों को भी बयान किया गया है।

बारकोड स्कैन करके वीडियो के माध्यम से भी नमाज़ का तरीक़ा देखा जा सकता है।

ربَّنا ولكَ الحمدُ
حمدًا كثيرًا طيِّبًا مُبارَكًا فيه
4:25 / 13:42

इस्लाम के बारे में विभिन्न भाषाओं
में संवाद करें

इस्लाम के बारे में अधिक
जानकारी के लिए

यह नमाज़, जिसे मुसलमान दिन व रात में फ़र्ज़ के रूप में पाँच बार अदा करते हैं, जिसे वे उस समय तक नहीं छोड़ते, जब तक उनके अंदर शक्ति व क्षमता बाक़ी रहती है, जिसके लिए वे मीठी नींद को त्याग देते हैं और काम-काज छोड़ देते हैं, यह दरअसल माँ की उस ममता भरी गोद के समान है, जहाँ छोटा बच्चा उस समय शरण लेता है, जब उसे कोई चीज़ डराती है। तौहीद (एकेश्वरवाद) के बाद, मुसलमान को इसे सीखने एवं सिखाने के लिए सबसे ज़्यादा उत्सुक होना चाहिए। इस पुस्तिका में नमाज़ का, तकबीर (अल्लाहु अकबर) से तसलीम (सलाम) तक, सरलता के साथ विस्तार से विवरण है। साथ ही इससे संबंधित कुछ आदेशों एवं नियमों को भी बयान किया गया है।

बारकोड स्कैन करके वीडियो के माध्यम से भी नमाज़ का तरीक़ा देखा जा सकता है।

osoulcenter
www.osoulcontent.org.sa
इस पुस्तक तथा अन्य पुस्तकों को ओसौल स्टोर (OSOUL STORE)
के माध्यम से डाउनलोड करने के लिए :
OSOUL STORE
osoulstore.com